ISSN: 0973-0583

कमल प्रसाद बौद्ध का व्यक्तित्व एवं परिवेशगत संघर्ष में बौद्ध धर्म के प्रति नवीन दृष्टिकोण

निशी कमल

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, रामचन्द्र चन्द्रवंशी विश्वविद्यालय, पलामू (झारखण्ड)

प्राचीन समय से ही मानव का इतिहास तथागत गौतम बुद्ध को ऐसे महान सपूत के रूप में प्रदर्शित करता है। अभी तक कोई ऐसा महान पुरुष पैदा नहीं हुआ। तथागत गौतम बुद्ध ने मानव-संस्कृति एवं मानव-समाज में सामाजिक न्याय, सामाजिक परिवर्तन के लिए अनमोल रत्न प्रदान किया है। जैसे- सामाजिक क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक और धार्मिक क्षेत्र में, साहित्य के क्षेत्र में, और चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष कार्य किया।

सामाजिक क्षेत्र में:

सामाजिक क्षेत्र में गौतम बुद्ध ने समाज में फैली विषमता को हटाकर समता, समानता, सहानुभूति, सहयोग, सद्भाव, सदाचार को स्थापित किया था। तथागत बुद्ध ने वर्णवाद,जातिवाद,छुआछूत,ऊँच-नीच आदि सभी विषमतामूलक व्यवस्थाओं को खत्म करके समतावादी, लोकतांत्रिक समाज की स्थापना की थी। नारियों का शोषण, अत्याचार अन्याय से मुक्त किया था। खूँखार डाकू अंगुलिमाल को एक शिष्ट व्यक्ति में बदलकर उसे धम्म की दीक्षा दी और एक नयी भावना उसमें जागृत किया। सामाजिक क्षेत्र में गौतम बुद्ध ने लोकतांत्रिक समाज की स्थापना कर मानव-मानव के बीच सामाजिक न्याय दिलाया था, जो आज भी समाज में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावी हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में:

शिक्षा के क्षेत्र में गौतम बुद्ध ने कहा था- सूर्य केवल दिन में आकाश साफ रहने पर चमकता हैं, चन्द्रमा केवल रात में महीना पूरा होने पर प्रकाशित होता हैं, अग्नि केवल ईधन पाने पर ही प्रदीप्त होती है, परन्तु शिक्षा, बुद्धि-विवेक, चेतना, प्रज्ञा, शील दिन-रात निरन्तर समान रूप से प्रकाशित होते रहते हैं।

गौतम बुद्ध ने बताया कि संसार में चारों तरफ दु:ख ही द्:ख है। सारा जगत दु:खी हैं। जैसे- जन्म भी दु:ख है, मृत्यु भी दु:ख है, रोग भी दु:ख है, बुढापा भी दु:ख है, अप्रियों से संयोग भी दु:ख है, प्रियों से मिलन भी दु:ख है, अभाव भी दु:ख है, इच्छित वस्तु का नहीं मिलना भी दु:ख है। निरक्षरता, अशिक्षा, अविधा, तृष्णा, अज्ञानता, अन्ध विश्वास एवं अभाव दु:ख के कारण हैं, तथा उस अविद्या, अज्ञान, अन्धविश्वास एवं अभाव को दूर करने के लिए गौतम बुद्ध ने मानव-कल्याण हेतु 'बुद्धं सरणं गच्छामि' का रास्ता बताया। बुद्धं सरणं गच्छामि का अर्थ हम बुद्धि विवेक चेतना, प्रज्ञा, की शरण में जायें। बुद्धि-विवेक, के द्वारा ही मानव-समाज, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, सम्मान-यश, गौरव, प्रतिष्ठा सब कुछ प्राप्त हो सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में गौतम बुद्ध द्वारा बताये गये मार्ग अनमोल हैं, जिसको तर्क की कसौटी पर कसने पर न्यायसंगत एवं कल्याणकारी प्रतीत होता है।

नैतिक क्षेत्र में:

गौतम बुद्ध ने नैतिक जीवन के लिए पंचशील दिया है। नैतिकता का अर्थ सदाचार या नीति के नियम। पंचशील महामानव गौतम बुद्ध की खोज और नया प्रयोग है। पंचशील भारतीय और संस्कृति भारतीय समाज के लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव-समाज के सुखी, सम्मानित और सुन्दर जीवन जीने का मार्ग हैं। चरित्र-निर्माण के लिए पंचशील के नियमों का पालन करना अनिवार्य है। पंचशील ही जीवन की सही शिक्षा है। सुन्दर, सुखद, सम्मानित जीवन के लिए बुद्ध ने पंचशील को नैतिक शिक्षा का रूप दिया। जीवन को सुखी बनाने-हेतु अष्टांगिक मार्ग दिया। सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्मान्त, जीवन के लिए जरूरी है। सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि जीवन में सच्चे सुख और आनन्द की सृष्टि करते हैं

धर्म और धम्म :

धर्म का मतलब है, वह आदर्श और शक्ति रीति रिवाज जो धारण करने योग्य हो। धर्म वस्तुत: एक आन्तरिक शक्ति है। जिसके कारण संसार को सभी घटनायें घटती है

और जो आदिम आदमी की समझ से परे की बात थी। वह धर्म की कोटि में नहीं आ सकती। धर्म की मान्यता ने मनुष्य को मानने लिए मजबूर किया कि एक ही शक्ति ने आदमी और दुनिया दोनों को पैदा किया।

भगवान बुद्ध जिसे धम्म कहते हैं वह अन्य सभी ध र्मों से सर्वथा भिन्न है। भगवान बुद्ध ने कहा कि जाति नहीं, असमानता नहीं, ऊँच-नीच नहीं, उनका सिद्धान्त था कि किसी आदमी के जन्म से नहीं, बल्कि उसके कर्म से ही उसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए। तथागत बुद्ध के अनुसार धम्म के दो प्रधान तत्व हैं। प्रज्ञा तथा करुणा। प्रज्ञा का मतलब है बुद्धि, करुणा का मतलब होता हैं (दया) प्रेम, (मैत्री)। इसके बिना न समाज जीवित रह सकता है और न समाज में समता और (मैत्री) धम्म स्थापित हो सकती है। न उन्नति ही हो सकती है। प्रज्ञा और करुणा का अनिवार्य सम्मिश्रण ही तथागत का धम्म है। धम्म में जो नैतिकता है उसका सीधा मूल स्त्रोत आदमी को आदमी से मैत्री करने की आवश्यकता है। अपने भले के लिए ही यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति वह इन्सान से मैत्री करें।

कमल प्रसाद बौद्ध का व्यक्तित्व एवं परिवेशगत संघर्ष: कमल प्रसाद बौद्ध का जीवन विलक्षण विषमताओं का केन्द्र बिन्दु है। उनका व्यक्तित्व बड़ा ही आदर्श है। उन्होंने मानव-धर्म और समाज के लिए जो कार्य किया है वह बड़ा ही प्रशंसनीय रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान तो रहा ही है, धार्मिक क्षेत्रों में भी उनका कार्य विस्मृत नहीं किया जा सकता। उनकी रचनाओं के अध्ययन से विदित होता है कि उनमें राष्ट्रीयता की भावना भी कूट-कूट कर भरी हुई है। उन्हें अपने जीवन में बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ा है। अपने परिवार में उन्हें आर्थिक अभाव से गुजरना पड़ा। उनके अध्ययन के मार्ग में भी अनेक कठिनाइयाँ आई, मगर उन्होंने उन कठिनाइयों की परवाह न की और कठिनाइयों और समस्याओं से घिरे रहने पर भी हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने समाज में जहाँ-जहाँ भी विकृति देखी, आडम्बर और पाखण्ड देखा तथा जाति-पाँति की भावना देखी वहाँ-वहाँ उसकी अर्गलाओं पर चोट करने का प्रयास किया। समाज के कुछ लोगों द्वारा उनका विरोध किया गया, मगर वे अपने कार्य में डटे रहे।

भगवान बुद्ध की तरह ही बौद्ध जी मनुष्य को दु:ख से निवृत्त करना चाहते हैं। उनका कहना है कि संसार में दु:ख का होना स्वाभाविक है, यह व्यक्ति आत्म-स्थिति से उत्पन्न होता है। वे यह भी मानते हैं कि बौद्ध दर्शन वस्तुत: व्यक्ति दर्शन है। गंभीरतापूर्वक विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्ध मार्ग आत्म-क्रांति का मार्ग है। जिस प्रकार जन्म देने वाले की मृत्यु अवश्य होती है उसी प्रकार जो दु:ख उत्पन्न होता है उसकी भी समाप्ति अवश्य होती है। कमल प्रसाद बौद्ध ने इस रहस्य को अच्छी तरह जान लिया है। भगवान बुद्ध ने कहा था - **अत्त दीपो भव** बौद्ध जी भी इस बात को मानते हैं कि मनुष्य मात्र को अपनी आत्मा को प्रकाशित कर अन्य लोगों को भी प्रकाश प्रदान करना चाहिए। मानव के दु:खों को देखकर बौद्ध जी भी काफी दु:खी रहते हैं और उसके निवारण के लिए सतत् प्रयासरत है।

कमल प्रसाद बौद्ध एक उच्च कोटि के विद्वान हैं। वे किसी भी तथ्य को अच्छी तरह जानकर ही किसी विषय पर अपनी तूलिका चलाई है। बौद्ध जी द्वारा अनेक प्रकाशन-कार्य किये जा चुके हैं और उनकी पुस्तकें भी प्रकाशित की जा चुकी हैं। उन्होंने अनेक विषयों पर निबंध भी लिखा है।

'बौद्ध धर्म दर्पण', शिक्षा दर्शन एवं समाज के नूतन आयाम, पुस्तक 'नारी शिक्षा के विविध आयाम' 'समकालीन भारत की शिक्षा के विविध आयाम' बुद्धा फिलॉस्फी एण्ड वर्ल्ड पीस आदि पुस्तकें इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है। उनका जन्म 12 नवम्बर 1968 ई0 को वैशाली जिले के सिशौनी प्रबोधी, गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम राम चन्द्र सिंह और माता का नाम मखिया देवी थी। वे एक साधारण किसान थे। उनके माता-पिता जी एक आदर्श और चरित्रवान व्यक्ति थे जिन्होंने अपने पुत्र बौद्ध जी का पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से किया। उनके गाँव के अधिकतर लोग जहाँ अशिक्षित थे वहाँ उनके माता-पिता ने शिक्षा की ओर उनका ध्यानाकर्षण कराया। आगे चलकर बौद्ध जी ने शिक्षा के क्षेत्र में काफी प्रगति की। उनकी शैक्षणिक योग्यताएँ निम्नलिखित हैं -

प्राइमरी स्कुल एवं मिडिल स्कूल सिशौनी प्रबोधी, वैशाली, माध्यमिक शिक्षा-उच्च विद्यालय सराय,वैशाली -1984,इन्टर आई.एस.सी- लक्ष्मी नारायण महाविद्यालय, भगवानपुर, वैशाली -1986, बी.एस.सी. पासकोर्स -लक्ष्मी नारायण महाविद्यालय, भगवानपुर, वैशाली -1990,बी.एस.सी. ऑनर्स-एवं एम.एस.सी.आर.डी.एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर-एल. एल.बी-आर.पी.एस. लॉ कॉलेज, पटना। बी.एड. 1994: पटना ट्रेनिंग कॉलेज,पटना विश्वविद्यालय, पटना से प्रथम

श्रेणी से उत्तीर्णता प्राप्त की। एम.एड. 1996: स्नातकोत्तर शिक्षा विभाग, पटना विश्वविद्यालय पटना से प्रथम श्रेणी से उत्तीणता प्राप्त किया। एम.फिल-शिक्षा, पेरियार विश्वविद्यालय, कुप्पम, तमिलनाडु,एम.ए.-मनोविज्ञान-विनायाका मिशन विश्वविद्यालय सलेम, तमिलनाडु,एम.ए.-श्रम एवं समाज कल्याण विषय- विनायाका मिशन विश्वविद्यालय सलेम, तमिलनाडु पीएच.डी.- जन्तु विज्ञान 1999 डॉ० बी०आर० अम्बेदकर बिहार, विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, पीएच.डी. शिक्षा विषय-डॉ० बी०आर० अम्बेदकर बिहार, विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, से उपाधि मिली। कमल प्रसाद बौद्ध को शोध-कार्य का भी काफी अनुभव है। उनका शोधानुभव यहाँ दर्शाया जा रहा है। मुख्य सम्पादक आईडियल रिसर्च रिभ्यू शोध पत्रिका का 1998 से सम्पादन कर रहे हैं।

बौद्ध धम्म के अनुसार मनुष्य सर्वोच्च है। वह खुद अपना स्वामी है। इसे संसार में इसके बराबर अन्य कोई शक्ति नहीं है जो इसके भाग्य का निर्णय करें। बुद्ध ने कहा कि व्यक्ति स्वयं अपना मालिक है। भला इसका दूसरा मालिक कौन हो सकता हैं। उन्होंने कहा किसी अन्य व्यक्ति से सहायता या शरण मत खोज। उन्होंने सिखाया, प्रेरित किया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना विकास तथा मुक्ति का मार्ग स्वयं ढूँढना चाहिए क्योंकि मनुष्य में अपने को अपने परिश्रम तथा अपनी बुद्धि द्वारा सभी बंधनों, कुण्ठाओं लालसाओं, वासनाओं से मुक्त करने की शक्ति हैं तथागत कहते हैं कि तुम्हें स्वयं चलना हैं मैं तो केवल रास्ता बताने वाला हूँ। मैंने इसे स्वयं ढूँढ़ा हैं। इस व्यक्तिगत जिम्मेवारी के सिद्धान्त पर ही उन्होंने अपने अनुयायियों को पुरी स्वतंत्रता दी।

सामाजिक गतिविधियों में भी उनकी काफी रुचि है। विभिन्न पदों पर रहकर उन्होंने अनेक सामाजिक कार्य किये हैं। उनके उस पद और सामाजिक कार्य का विवरण यहाँ दर्शाया जाता है। संस्थापक सह सचिव,बुद्ध मिशन ऑफ इण्डिया, बिहार, अध्यक्ष,एजुकेशनल डेभलपमेन्ट कौन्सिल, बिहार, पटना, पूर्व अध्यक्ष, बिहार टीचर्स एडुकेटरस एशोसिएशन, पटना, महासचिव,गौतम बुद्ध बिहार, पटना। राष्ट्रीय सचिव,भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली। कमल प्रसाद बौद्ध को शिक्षा, समाजसेवा एवं शोध कार्य का भी काफी अनुभव है। उसके लिए उन्हें विभिन्न संस्थानों द्वारा सम्मानित किया गया।

बौद्ध धम्म में सामाजिक आर्थिक व्यवस्था

कमल प्रसाद बौद्ध के रचनाओं में सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था लोकतांत्रिक और साम्यवादी आदर्शों पर आधारित थी। राजकुमार सिद्धार्थ का जन्म कपिलवस्तु में हुआ था, कपिलवस्तु जनपद में गणतांत्रिक प्रणाली विद्यमान थी। इसलिए सिद्धार्थ ने बुद्ध बनने के उपरान्त अपने भिक्षु-संघ तथा जन-साधारण को भी इसी व्यवस्था से संचालित किया।

बुद्ध ने स्वतंत्रता, समानता, मैत्री और बन्धुत्व के आधार पर सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था की नींव डाली। उन्होंने मनुष्य के उन सभी विकृत और अदृश्य बन्धनों को अपने उपदेशों से काट दिया और उन्हें विमुक्त कर दिया जो आजतक धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विधानों एवं परम्पराओं से जकड़े हुए थे। उन्होंने जन-साधारण को सूचित किया कि सभी मनुष्य समान हैं। कोई भी मनुष्य अपनी बुद्धि और विवेक का प्रयोग कर समाज में किसी भी पद और प्रतिष्ठा को प्राप्त कर सकता है, कोई भी पद किसी वर्ग-विशेष के लिए सुरक्षित नहीं है। हर व्यक्ति स्वयं अपना भाग्य-निर्माता और विधाता है। अगर वह दु:खी है तो उसका कारण वह स्वयं है, अगर सुखी है, तो उसका भी कारण वही है, लेकिन, जब मनुष्य अपने से बाहर उस कारण को खोजने लगता है, वहीं पर अधार्मिकता शुरू हो जाती है। बुद्ध ने कार्य-कारण-नियम देकर जनता को यह संदेश दिया कि कोई भी कार्य बिना कारण के नहीं हो सकता है, उस कारण का निवारण कर देने पर कार्य सम्पन्न हो जाता है।

बौद्ध धर्म के प्रति कमल प्रसाद बौद्ध का नवीन दृष्टिकोण :

कमल प्रसाद बौद्ध को धर्म के प्रति विभिन्न विद्वानों का विभिन्न दृष्टिकोण रहा है। इस संबंध में स्वयं भगवान बुद्ध ने भी अपनी बात कही है। 'सर्वप्रथम धर्म या धम्म शब्द की प्रथम जानकारी भारत की ज्ञात सभ्यता ईसा से 530 वर्ष पूर्व में हुई थी। इस ज्ञात सभ्यता से पूर्व की रही सभ्यता-संस्कृति में धर्म/धम्म के जगह पर किस भाषा में किस शब्द का प्रयोग होता था, इस बात की जानकारी आज तक किसी को नहीं है। इसके बारें में आज जो भी लोग ज्ञात काल में तथागत गौतम बुद्ध ने पहली बार अपना ज्ञान प्राप्ति के बाद इस शब्द को धम्म चक्क पवत्तन (धर्म चक्र प्रवर्तन) के रूप में प्रयोग करते हुए स्थापित किए थे। उस समय भगवान गौतम बुद्ध के अनुसार धम्म/धर्म का अभिप्राय ''धारेती तिधम्मो'' से था। अब धारण क्या करेगा। सृष्टि जगत के अन्दर जो भी है, वह अपने अन्दर, अपने

स्वभाव से, अपने लक्षण से जो कुछ भी धारण करता है, वह उसका धम्म/धर्म है या उसे ही धम्म/धर्म कहते हैं। यही धम्म/धर्म मनुष्य के अन्दर विराजित राग और द्वेष के रूप में गुण, स्वभाव, लक्षण का पर्यायवाची माना जाता था।'[1] कहने की आवश्यकता नहीं कि धर्म में सात्विकता और नैतिकता का समावेश होता है। धर्म के संबंध में विभिन्न विद्वानों के दृष्टिकोण को हमने देख ही लिया। अब कमल प्रसाद बौद्ध के दृष्टिकोण पर विचार करना है। कुछ लोग भ्रमवश धम्म और धर्म में अन्तर मानते हैं, लेकिन बौद्ध जी के अनुसार इनमें कोई अन्तर नहीं है। अन्तर तो सम्यक् काल और सम्यक् अंतकाल (सामंत काल) में इसके प्रयोग और भावार्थ का है। दोनों काल में इसका उपयोग अलग-अलग भावार्थ के साथ हुआ है। यही सबसे बड़ा अन्तर है। बौद्ध धर्म के प्रति कमल प्रसाद बौद्ध का नया दृष्टिकोण है कि 'भ्रमवादियों द्वारा प्रत्यारोपित संप्रदाय कुदरत का कानून नहीं है, प्रकृति की रीत नहीं है, स्वभाव नहीं है। इसी वजह से आज का धर्म किसी भी दृष्टिकोण से पूर्व के धर्म का पर्यायवाची नहीं है।

विद्या और अविद्या दोनों ही में से अविद्या ऐसी चीज है जिससे 'रागाग्नि, द्वेषाग्नि तथा मोहाग्नि की उत्पत्ति होती है, जो सभी को जलाती है। अकुशल कर्मों के त्याग और सदाचार का जीवन बिताने से तीनों प्रकार की अग्नियों का शमन हो जाता है। कमल प्रसाद बौद्ध का इस संबंध में नया दृष्टिकोण है कि मनुष्य अविद्या से दूर रहकर ही सुख-शांति की प्राप्ति कर सकता है। बौद्ध जी मानते हैं कि बौद्ध धर्म निश्चयात्मक रूप से एक मजहब है। इसने पृथ्वी के कम-से-कम 50 करोड़ मानवों को नैतिक जीवन जीने एवं आध्यात्मिक आनंद मानने की प्रेरणा दी है। इसमें लोगों को भौतिक कष्ट उठाने और बुरे दिन काटने का सामर्थ्य भी है। इसने लोगों को भला, दयालु, उदार, पवित्र और मैत्रीयुक्त बनाया है। इसलिए मनुष्य को सतत् सात्विक गुणों को अपनाना चाहिए। दूसरों के प्रति करुणा और मैत्री का भाव अपने में लाना चाहिए।

कमल प्रसाद बौद्ध का मानना है कि बुद्ध का धर्म एक अनक्षर तत्त्व था। बौद्ध ग्रन्थों में इसे अक्षरों के द्वारा अप्रतिपाद्य बताया गया है। चूँकि बुद्ध द्वारा उद्भावित धर्म अक्षरों द्वारा नहीं बताया जा सकता, इसलिए न इसका उपदेश किया जा सकता है और न ही इसको सुनकर ग्रहण किया जा सकता है। इसलिए उसको एक लौकिक धर्म का रूप देकर ही लोगों के हृदय में इसकी उदात्त विचारधारा का संचार किया जा सकता है। दूसरे अर्थों में बौद्ध धर्म की विचारधारा ऐसे ही अनुप्राणित करनेवाली प्रतीत होती है। इसलिए उसके उपदेश की कोई बहुत आवश्यकता दिखायी नहीं देती। लंकावतार सूत्र में कहा भी गया है कि बुद्ध ने कभी कोई उपदेश नहीं दिया। बुद्ध ने किसी नये धर्म का प्रतिपादन नहीं किया। उन्होंने पुराने धर्म की मिथ्या बातों को नकार दिया, जिससे उद्भूत होनेवाला धर्म एक विशुद्ध मानव धर्म अर्थात् बौद्ध धर्म है।

भारत में नशीले पदार्थ के सेवन से लोगों को मना करने का कार्य बौद्ध धर्म ने ही किया और बाताया कि इससे शरीर को विभिन्न रोगों का सामना तो करना ही पड़ता है, मस्तिष्क भी विकृत हो जाता है। नशीला पदार्थ के सेवन से काम-वासना उदिप्त होती है जो विभिन्न हानियों का मूल है। 'आपस्तम्भ शाखा' के अध्ययन से विदित होता है कि उन दिनों पशुओं की बलि किसी देवता या देवी के स्थान पर दी जाती थी। इससे कृषि प्रधान देश भारतवर्ष में कृषि-कार्य के लिए बछड़ों का अभाव दिखता था। साधारण अवलोकन से ही पता चलता है कि संसार में दुक्ख हैं। हम दुक्ख-चक्र में बँधे हैं। जिसे हम सुख समझते हैं, वह भी वास्तव में दुक्ख ही है। दुक्ख में थोड़ी-सी कमी हमें सुख का एहसास कराती है। संसार में दुक्ख है। इसका कारण भी है। कारण के निरोध से दुक्ख का निरोध होता है। दुक्ख के निरोध का मार्ग भी है जिसका साक्षात्कार भगवान बुद्ध ने सम्बोधि प्राप्ति में किया था। दुक्ख के निरोध का मार्ग आठ अंगो वाला है जिसे अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है। यही अष्टांगिक मार्ग पृथक (साधारण) जनों को आर्य (अच्छा, धम्मचक्र का अनुगामि) बनाता है। इसीलिए इसे आर्य अष्टांगिक मार्ग (अरियो-अट्ठङिगको मग्गो) कहा जाता है। इसे मध्यम मार्ग (मज्झीमा पटिपदा) कहा जाता हैं। इस मार्ग के आठ अंग है। सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वचन, सम्यक कर्म, सम्यक आजीवन, सम्यक व्यायाम, सम्यक जागरूकता एवं सम्यक समाधि। यही आठ अंग शील-समाधि -प्रज्ञा में भी समाया हुआ है। जहाँ सम्यक वचन, सम्यक कर्म एवं सम्यक आजीवन, शील है, वहीं सम्यक व्यायाम, सम्यक जागरूकता एवं सम्यक समाधि, समाधि के अंग हैं। प्रज्ञा के तहत सम्यक संकल्प एवं सम्यक दृष्टि आते हैं।

उपरोक्त आर्य मार्ग पर चलने से दुक्ख चक्र की सभी कड़ियाँ कमजोर होते-होते टूट जाती हैं। दुक्खचक्र में 12 करियाँ होती है:- अविद्या-संस्कार- विज्ञान- नामरूप-

सलायतन- स्पर्श-वेदना-तृष्णा-उपादान-भव-जन्म-जरा-मरण। सभी कड़ियाँ एक दूसरे के कारण उत्पन्न होती हैं। जब ये कड़ियाँ एक-दूसरे के निरोध के कारण टूटने लगती है, तब यही दुक्ख-चक्र, धम्म-चक्र में परिवर्तित हो जाता है। राग-द्वेष क्षीण होते-होते समाप्त हो जाता है। अंत में मोह (मूढ़ता/अविद्या) का भ्रम-जाल भी टूट जाता है। राग-द्वेष-मोह से मुक्त होने पर सामान्य जन, अर्हत बन जाता है; निर्वाण का साक्षात्कार कर लेता है। भगवान बुद्ध ने लोगों को जो धर्म (धम्म) सिखलाया था, वह सार्वजनिक है, अकालिक (सभी समय में सही रहनेवाला) है, सही रूप में दिखने वाला है, सभी के लिए खुला है और इसी जीवन में महाफलदायी हैं, जिसपर चलने से सारे मानसिक दुक्खों से मुक्त हुआ जा सकता है।

स्पष्ट है कि आर्य अष्टांगिक मार्ग पर चलने वालों के लिये कोई दिखावा अर्थात् संस्कार मायने नहीं रखता। फिर भी साधारण लोगों के लिए स्वस्थ संस्कार बहुत मायने रखता है। संस्कार (करना अथवा करवाना) कम-से-कम दुक्खों से मुक्ति के मार्ग पर चलने का आह्वान तो करता ही है बशर्ते कि सभी संस्कारों में बताई गई बात को जीवन में उतारने का सार्थक प्रयास किया जाए।

बौद्ध धर्म के प्रति भी कमल प्रसाद बौद्ध का दृष्टिकोण सर्वथा नया है। 'बुद्ध ने किसी नये धर्म का प्रतिपादन नहीं किया। उन्होंने पुराने धर्म की मिथ्या बातों को नकार दिया, जिससे उद्भूत होनेवाला धर्म एक विशुद्ध मानव धर्म अर्थात् बौद्ध धर्म है। इस बात को सरल अर्थों में इस तरह कहा जा सकता है कि उन्होंने निर्वाण के लिए किसी नये मार्ग का निर्माण नहीं किया, बल्कि पुराने रास्तों को ही अपने आचरण की पवित्रता द्वारा बाधाओं और कंटकों से मुक्त किया। बुद्ध का धर्म सदैव सत्य से आप्लावित दिखायी पड़ता है।

निष्कर्ष:

इस प्रकार बौद्ध धर्म के प्रति कमल प्रसाद बौद्ध का जो नया दृष्टिकोण है वह सर्वथा व्यावहारिक है। मानव के दु:खों को देखकर बौद्ध जी भी काफी दु:खी रहते हैं और उसके निवारण के लिए सतत् प्रयासरत है। बौद्ध जी का एक नया दृष्टिकोण और वह यह है कि बौद्ध धर्म को मानने वाले लोगों के लिए यह जरूरी नहीं है कि वे चीवर ही धारण करें। केवल बौद्ध संन्यासी ही चीवर धारण करें और गृहस्थ लोग सामान्य वस्त्रों को धारण किया करें। सभी प्राणि सुखी हों, सब कुशल-क्षेम से रहें, सब कल्याणकारी दृष्टि से देखे। किसी को कोई दुक्ख प्राप्त न हो। इ स प्रकार कमल प्रसाद बौद्ध का को शोध-कार्य का भी काफी अनुभव है। उनका शोधानुभव यहाँ दर्शाया जा रहा है कि व्यक्तित्व एवं परिवेशगत संघर्ष की अपनी अलग ही विशेषताएँ हैं। बुद्ध ने कभी यह नहीं कहा कि लोग बौद्ध धर्म को अपनाएँ ही, बल्कि यह कहा कि आओ और इस धम्म को देखो और समझो । मैं भी उसी बात को दुहराता हुआ इस मंगल भावना के साथ कि

सब्बे सत्ता सुखी होन्तु, सब्बे होन्तु च खेमिनो ।
सब्बे भद्राणि पस्सन्तु, मा कंचि दुक्खमागमा ॥

सभी प्राणी सुखी हों, सब कुशल-क्षेम से रहें, सब कल्याणकारी दृष्टि से देखे। किसी को कोई दुक्ख प्राप्त न हो । उन्हें साहित्य और दर्शन के अध्ययन में काफी मन लगता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. डॉ0 कमल प्रसाद बौद्ध : धम्म-चक्क- 2022, बुद्ध मिशन ऑफ इण्डिया, पृ0 सं0 42
2. डॉ० कमल प्रसाद बौद्ध: बौद्ध धम्म दर्पण
3. प्रो० (डॉ०) कमल प्रसाद बौद्ध समाज के उत्थान में बौद्ध धम्म का योगदान
4. डॉ० कमल प्रसाद बौद्ध : बौद्ध साहित्य का लोकोपयोगी चिंतन
5. 'वियोगी', पं. मोहनलाल महतो : 'जातक कालीन भारतीय संस्कृति', बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1998
6. डॉ0 कमल प्रसाद बौद्ध : बुद्ध की शिक्षा एवं विश्व शांति, बुद्ध मिशन प्रकाशन, पटना।
7. Dr. Kamal Prasad Bauddha : Buddha Philosophy and World Philosopy
8. डॉ0 कमल प्रसाद बौद्ध, धम्म चक्र स्मारिका का 2001-'बुद्ध मिशन ऑफ इण्डिया'
9. डॉ0 कमल प्रसाद बौद्ध, धम्म चक्र स्मारिका 2002 बुद्ध मिशन ऑफ इण्डिया'
10. डॉ0 कमल प्रसाद बौद्ध, धम्म लोक स्मारिका 2002 बुद्ध मिशन ऑफ इण्डिया, पटना
11. डॉ0 कमल प्रसाद बौद्ध, भगवान बुद्ध और उनका धम्म- डॉ० बी० आर० अम्बेडकर 2002

❖❖❖